Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुलसी

खण्ड-काव्य

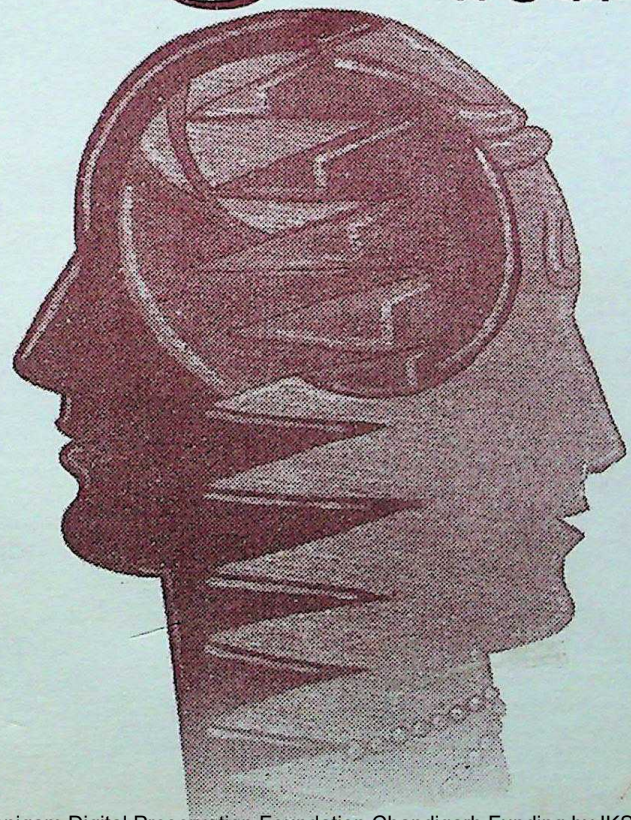

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

महेन्द्र 'बावरा'

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

amnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-20

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुलसी

(खण्ड काव्य)

महेन्द्र बावरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

सोनी प्रकाशन, मेरठ

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वाधिकार लेखकाधीन

तुलसी : खण्ड काव्य

महेन्द्र बावरा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2004

द्वितीय संस्करण फरवरी 2012

आवरण चित्र : आँचल
सरस्वती मन्दिर सूरज कुण्ड
रोड़, मेरठ

सहयोग राशि : अस्सी रुपये मात्र

टाइप सेटिंग : रेशुल बावरा
A-169, श्रद्धापुरी, फेज–दो
कंकरखेड़ा, मेरठ

मुद्रक : शक्ति प्रिन्टर्स
निकट स्माईल डिग्री कॉलिज,
ईदगाह चौराहा, मेरठ 9897621699

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding 9897621699

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आमुख

वैसे तो संत कवि तुलसीदास जी ने अपने जीवन–कार्य कलापों के बारे में कुछ नहीं लिखा । उनके द्वारा लिखित धार्मिक ग्रंथों में जहाँ–तहाँ मिले कुछ धुंधले–से जीवन संकेतों के आधार पर हिन्दी साहित्यकारों ने काव्य, नाटक, एकांकी व अन्य विधाओं में काफी कुछ लिखा, जिनमें उनकी अपनी कल्पनाऐं भी शमिल है। डा० रामकुमार वर्मा के नाटक 'संत तुलसीदास' तथा अमृतलाल नागर के साहित्यिक उपन्यास 'मानस का हंस' से प्रेरणा व मार्गदर्शन लेकर इस खण्ड–काव्य 'तुलसी' की रचना हुई ।

सामाजिक उपन्यास 'अधूरा कफन' (1984), काव्य संग्रह 'बिखरता आदमी' (2003) तथा सामाजिक उपन्यास 'प्रतीक्षा' (2003) से अगले सृजन के रूप में माँ वाणी द्वारा रचवाया गया यह खण्ड–काव्य 'तुलसी' आपके हाथ में है । काव्य साहित्य के महासागर में से मात्र कुछ जल–कण समेटकर व उन्हें काव्य परिवेश में समेटकर काव्य प्रेमियों के सम्मुख रखने का हल्का–सा प्रयास कर सका हूँ । यह आत्मविश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस खण्ड काव्य की रचना करने में कहीं भी मैं कर्ता नहीं रहा हूँ, बल्कि कोई अदृश्य शक्ति–शायद माँ सरस्वती ही मेरे द्वारा यह सब कराती रही ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं आभारी हूँ डा० श्री शिवचरण शर्मा 'मधुर', श्री रामकुमार गौड़, राजकुमार शर्मा 'राज', श्री यशपाल 'कौत्सायन', डॉ मनोज भारद्वाज, श्री इन्द्रजीतसिंह तथा डॉ सुग्रीवसिंह के साथ–साथ उन सभी मित्रों का, जिन्होंने मुझे इस काव्य सृजन में उत्साह की ऊर्जा प्रदान की । मेरे अनुज मनोज भारद्वाज ने भी मुझे संबल प्रदान किया ।

महेन्द्र बावरा
शिक्षक
रामसहाय इण्टर कॉलिज,
गढ़ रोड, मेरठ
9997424357. 9808650719

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी दृष्टि में

भारतीय संस्कृति में वेद–पुराण, रामायण, महाभारत, श्रीरामचरितमानस, सूरसागर, मनुस्मृति तथा श्रीमद्भगवत आदि धर्मग्रंथों में वर्णित सभी देवी–देवता, महापुरुष, अवतार और ऋशि–मुनि पूजनीय, वन्दनीय एवं आदरणीय हैं । लगभग सभी भारतवासी इन धर्मग्रंथों से परिचित हैं परन्तु इनके पाठकों अथवा श्रोताओं की सदैव जिज्ञासा रही है कि कैसे महापुरुष और महान होंगे वे लोग जिन्होंने इनकी रचना की ? उनके मन में इन्हें लिखने का विचार कैसे आया ? उन्हें यह सुमार्ग किसने दिखाया ? कौन रहे होंगे उनके गुरु ? कैसा भक्त परिवार रहा होगा उनका ? – – – – आदि । इन सभी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए एवं इन महापुरुशों के व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने के लिए 'तुलसी' खण्डकाव्य श्री महेन्द्र बावरा का सराहनीय कदम है ।

कविता सदा से ही भाषा की साहित्यिक एवं कलात्मक सौन्दर्यानुभूति का प्रमुख स्रोत रही है । मानव–मन की अन्तर्निहित पीड़ाओं, आकांक्षाओं तथा मनोभावों का छन्दोबद्ध एवं अलंकारिक प्रकटीकरण ही कविता है । आदिकाल से ही यह मानव हृदय में आनन्द व रस का संचार करती रही है । इसी कारण मानव हृदय कविता के प्रति विमुग्ध होता है, इसकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रमणीयता में रमना चाहता है और उसकी भाव लहरियें में आनन्दविभोर होना चाहता है । सम्भवतः इसीलि क़वि, साहित्यकार, पत्रकार, कहानीकार, उपन्यासकार अभिनेता व कुशल अध्यापक श्री बावरा जी ने 'तुलसी खण्डकाव्य के प्रकाशन हेतु इस विधा को चुना ।

गद्य एवं पद्य दोनों में समसिद्धहस्त श्री बावरा जं के शृंगार रस के वियोग पक्ष के साथ–साथ तुलसीदास जं के साथ भावसाम्य का उदाहरण देखिये

तुलसीदास के राम श्रीरामचरितमानस में पूछते हैं

हे ! खग–मृग हे ! मधुकर स्रेनी , तुम देखी सीता मृगनैनी ।

तो बावरा जी के तुलसीदास 'तुलसी' खण्डकाव्य में पूछते हैं –

कोई बताओ कहाँ है रतना, पर मौन निरुउत्तर सब चले गये । पद–**16**

पूर्ण रूप से छन्दोबद्ध, रसों एवं अलंकारों से ओतप्रोत इस खण्डकाव्य में बहुत अच्छे ढंग से किन् स्वाभाविक विरोधाभाश की एक सुन्दर अभिव्यक्ति देखते बनती है –

मैं सब पाकर खाली हाथ रहा, तूने सब पाया खोते–खोते । पद–**25**

काव्य के माध्यम से समाज को कडुवा सच कहने से भी बावरा जी परहेज नहीं करते और कहते हैं –

पूनम को प्रिये सब चाहते हैं, अमावस्या का ना साथ किया है । पद – **29**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवि अपनी कविता के साथ–साथ उसमें छिपा संदेश भी समाज में छोड़ देता है बावरा जी किस प्रकार अवरोधों से डटकर मुकाबला करने व सदा आगे बढ़ने की सीख देते हैं –

झंझावत क्या रोकेंगे चाहत को, ना रोक सकेंगी सरिता लहरें ।

पद–**65**

शिक्षा जीवन–पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है । यह कहीं से भी छोटे या बड़े किसी से भी ली जा सकती है । इसका एक उदाहरण –

अब रतना गुरू तुलसी शिष्य हुआ, रतना–मुख माँ वाणी बोल रही है । पद – **84**

दु:ख की घड़ी में समान दशा वाली घटनाएँ हृदय में कैसे हिलोरें मारती है ? एक बानगी देखिए –

एक तीय ने यम से स्वामी छीनें, इसने पास राम के भेज दिये । पद –**97**

अन्त में मैं श्री बावरा जी द्वारा कृत इस शुभ कार्य की प्रशंसा करते हुए उन्हें साधुवाद देता हूँ और नयी कृति हेतु परम्पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि बावरा जी को ऊर्जा, स्फूर्ति, सामर्थ्य, स्वास्थ्य लाभ से योग्य रखे ।

एम० के० भारद्वाज
प्राचार्य सूर्यांश कॉलिज ऑफ हायर
ऐजूकेशन, बाईपास रोड, मेरठ

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह 'तुलसी' खण्ड–काव्य माँ वाणी
को समर्पित
महेन्द्र बावरा

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शूकर क्षेत्र के सोरो गाँव में,
तुलसी विप्र भार्या संग रहते थे ।
दोनों में रहा है अटूट प्रेम,
यह सोरो के जन–जन कहते थे ।।
जन–जन का बस यही कथन,
यह अटल प्रीत यदि घर–घर हो।
धरती पर उतरे स्वर्ग लोक,
जीवन–सुख का मधु निर्झर हो।। 1

राम अरु राम–कथा के सहारे,
सुख–संतोष की रोटी खाते थे ।
संतोष मिला तो सब कुछ पाया,
सोच राम–कथा नित गाते थे ।।
जो भी कथा पर चढ़ावा आता,
दिनचर्या उससे ही चलती थी ।
धर्म,कर्म–राम–कथा करते–करते,
नित दोपहर शाम में ढलती थी ।। 2

तुलसी रतना रतना तुलसी थी,
जैसे दोनों थे शिव–पार्वती ।
राम–वैदेही–सम संग रहते,
जैसे थे कामदेव संग तिय रति ।।
प्रेम रतना से इतना करते ,
जैसे चकोर शशि–मुख लखते हैं ।
सब विचार–भाव अरु मन एक थे,
तन–नाम से ही अलग दिखते हैं।। 3

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुलसी वृक्ष तो मूल है रतना,
एक छुवन तो एक प्रेम–स्पंदन है
चाहत प्रेम का संयोग अनुपम,
एक सुगंध तो एक प्रेम–चन्दन है ।
तुलसी मृग तो कस्तूरी रतना ,
एक बटोही तो एक लक्ष्य हुए हैं
प्रेम–चाहत–भक्ति–अरु बुद्धि में,
एक युधिष्ठिर तो एक यक्ष हुए हैं ।।

भक्तों को कथा सुनाते दिन में,
सायं–स्वयं बीती तिय–बताते थे
खोटे नक्षत्र चुनिया माँ पारबती,
एक–एक करके कथा सुनाते थे ।
मुख बत्तीस दाँत–त्रिदस मास जन्म,
रोया नहीं राम बोला मैंने
उदर–पूर्ति को भीख माँगते, ऐसा–
पिय वरण किया रामबोला तूने ।।

नित भक्तों को कथा सुनाते स्वामी,
मेरे मन की भी तो सुना करो
सब नारी अपने मायके जातीं,
मुझे जाने को क्यों मना करो ।
भाई पद्माकर ने आज बताया,
जननी सावन में बुला रही है
मेरी स्मृति अरु वो नटखट बातें,
परिजनों को वहाँ रुला रही है ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
त्रिसाल बीते दोनों को एक हुए,
एक बार नैहर ना भेजा स्वामी ।
मास बदरिया रह संदेशा भेजूँ,
आओ सोरो, ले जाओ स्वामी ।।
सखी सहेली मेरे बचपन की,
बुलाए मालिनि पुष्पा इस रतना को ।
कहता होगा वो लाड़ पिता का,
नैहर मिला ले जाओ रतना को ।। 7

कहे महिला ये आसपास की ,
तुलसी ने रतना को मोल लिया ।
नहीं तो भला मयके ना जाती,
नित ताना दिया अरु मखौल किया ।।
सबका मुँह बन्द करने को स्वामी,
भाई संग मायके जाना होगा ।
पड़ोसिन सीमा लांघ रही हैं,
स्वामी इनका दंभ हरना होगा ।। 8

प्रेम की चर्चा जब सोरो फैली,
क्यूँ समाज से फिर लजायें हम ?
शशि–तारों ने आकाश सजाया,
यूँ प्रेम से यह पन सजायें हम ।।
तुलसी तन रतना उसकी छाया,
यह विच्छेद फिर असंभव होगा ।
जीव छोड़ गया अगर देह तो,
फिर तुलसी–जीवन असंभव होगा ।। 9

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे जीव देह में है रहता,
वैसे तुलसी रहता रतना में
जैसे है जलज सलिल में रहता,
वैसे तुलसी रहता रतना में
अब तुम्हीं बताओ कैसे संभव है ?
देह यहाँ अरु जीव बदरिया में
यह अहोभाग्य मेरा है रतना,
जो यहाँ है लाल गुदरिया में ।।

तिय विवशता पिय हट बाल–सम,
नैहर सावन कैसे झूल सकेगी
गाँव बदरिया वे सखी सहेली,
उन्हें रतना कैसे भूल सकेगी
बदल बात–भाव कहती रतना,
आज्ञा उलंघन ना कर पारूँगी
कल लौट जाये भाई शौक से,
पिय–अकेला ना कर पाऊँगी ।।

प्रिये सम्मान करो पद्माकर का,
मैं जाता हूँ अब हाट बिसाने
जी भरकर बतियाना भाई से,
कल जाना बदरिया–बाट दिखाने
गंगा–पार चलेंगे संग चलेंगे,
जैसे अब तक चलते आये हैं
सुख में हमारे दिन–रात ढलेंगे,
जैसे अब तक ढलते आये हैं ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलो बहन बंदरिया गाँव चलें,
तुलसी देर रात तक आ पाएंगे ।
अभी समय है तो लाभ उठाओ,
वे आये हम ना जा पायेंगे ।।
चल पद्मा, पर मेरे तुलसी,
बिन मेरे कैसे रह पायेंगे ।
रतना–विहीन जब घर देखेंगे,
कैसे धीरज धर पायेंगे ? **13**

देर रात जब तुलसी घर आये,
तो दर सूना था बिन रतना के ।
घर सूना था मन सूना था,
सब सूना था बिन रतना के ।।
हिय में अगणित आशंकाएँ उठकर,
भयभीत करती थी तुलसी को ।
रतना–रतना वह पुकार रहा था,
पर वह नहीं मिली थी तुलसी को ।। **14**

नभ–मोती तुलसी लाया था,
प्रिये की माँग सजाने को ।
शतदल से कलियाँ माँगी थी,
प्रिये की राह बिछाने को ।।
शाम हुई घर आकर देखा,
सूना घर–दर बिन रतना के ।
प्रेम–समन्दर सूख गये थे,
वह कैसे जिये बिन रतना के ? **15**

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कोई बताओ कहाँ है रतना ?
सब मौन निरुत्तर चले गये
गौरी ने बताया ताली देकर,
तुम गये कि दोनों चले गये ।
क्या कहा, रतना चली गई ?
दुःख–सागर डूब गये तुलसी
जैसे जीव गया, देह निस्सार हुई,
फिर भी बदरिया चल दिये तुलसी।। 1

कह देती सत्य यदि मुझ से,
मन का विश्वास बना रहता
तुम बन्धु संग जाती नैहर,
अपमान न अन्तर को दहता ।
जो विश्वास था तिय–पिय में,
उसे भी तुमने तोड़ दिया
सुखी जीवन हम जीते थे,
उसे दुःख–दिशा में मोड़ दिया ।। 1

भाई संग बदरिया ना जाऊँगी,
ऐसा तुमने विश्वास दिया था
अपने वचन पर टिकी रहोगी,
ऐसा तुम पर विश्वास किया था ।
पाप किया है विश्वास तोड़कर,
यह क्या कर डाला तुमने रतना
जन्म से दुखियारे तुलसी को,
दिया पीड़ा–संसार तुमने रतना ।। 1

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिना तुम्हारे कब तक रहना,
यूँ ताने–बाने बुनने होंगे ?
पुष्पित–मकरंदी बगिया से,
नित शूल मुझे चुनने होंगे।।
बदरिया से आकर घन–शावक,
सुना रहे तेरे हालात प्रिये ।
शीघ्र हुलसी–सुत तुलसी से,
करना जी भरकर बात प्रिये ।। 19

अधर–मुस्कान चुराने को मैं,
अविराम चला डरते–डरते।
कुंदन कितनी बार बना मैं,
समय–पावक में जलते–जलते।।
गंगा–तट से भी ज्यादा पावन,
मैंने समझा तेरा द्वार प्रिये।
मैं बता–बता सब रीत गया,
ना समझी जीवन–सार प्रिये।। 20

भाद्र मास की धूप–छाँव–सी,
देखा था तुमको आते–जाते।
भर आये आँखों में आँसू,
विरह के गीत गाते–गाते।।
इतना–सा बस साथ निभाकर,
क्यों छोड़ गये मेरा साथ प्रिये ?
मयका इतना प्यारा था फिर,
क्यों दिया हाथ में हाथ प्रिये ? 21

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलने को तो चल सकते थे,
कुछ दूरी तक साथ निभाने को
समझता मधु पवन आई है,
पतझड़ में पुष्प खिलाने को
मुझे मरु राहों पर छोड़ दिया,
तुम बरसी बन जलधार प्रिये
निशांत तक मैं यहाँ जागा, तुम–
सपनों में खोई उस पार प्रिये ।। 2

काश! कह देते किसी दिन इतना,
हमको तुमसे वह प्रेम नहीं है
तेरे जीने या यूँ मरने से,
हमें कोई सरोकार नहीं है।
मैं तो विष पीने का आदी हूँ,
कर लेता और गरलपान प्रिये
तेरी भी जिद पूरी हो जाती,
मेरा भी रह जाता मान प्रिये।। 2

तुम भूल गये हो शायद यूँ ही,
सोरो–दीप बुझे जलते–जलते
दीनबन्धु–धाम जा पहुँची रतना,
नहीं रुकेंगे पग चलते–चलते।
मन–मन्दिर के सूने आँगन को,
क्यों छोड़ गये निराधार प्रिये
उदास–क्लांत सोरो–बीथिका,
आओ, देखो तो एक बार प्रिये ।। 2

Egamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मैं सब पाकर खाली हाथ रहा,
तूने सब पाया खोते–खोते।
पीड़ा देखती उन आँखों की, जो–
थकी नहीं तुझ–बिन रोते–रोते।।
बातों–बातों में बनी बात में,
क्यों कर बैठे पहला प्यार प्रिये ?
मेरे–अन्तर में छोड़ गये, जो–
मर्माहत मेरा संसार प्रिये।। 25

पुत्तन, हुसैनी व चन्दनसिंह रतना,
उपहास करे मग चलते–चलते।
तुमने स्मरण किया शायद यूँ ही,
यह रात रुकी ढलते–ढलते।
बदरिया पर जा बरसो बदरिया,
कहना तुलसी है उस पार प्रिये।
छोड़ बदरिया उस पार चलो, या–
हुलसी–सुत आता इस पार प्रिये।। 26

निर्दयी पद्माकर क्या जानेगा ?
है तुलसी उपासक रतना का।
मन में रतना तन में रतना,
है तन–मन चातक रतना का ।।
भाव में रतना चाह में रतना,
है तुलसी मानक रतना का ।
है तुलसी रतना, रतना–तुलसी,
है तुलसी–मन याचक रतना का ।। 27

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कोई स्वप्न रतना तुम्हें जगा दे,
महकी रातों में यदि सोते–सोते
समझ लेना कोई टूट चुका है,
तेरे विरह का बोझा ढोते–ढोते
लौटकर सोरो में देखा होता,
कोई कैसे जिया इस पार प्रिये
हे प्रिये ! सुनाकर कोई प्रभाती,
दे जाओ नया आधार प्रिये।। 2

पूनम को प्रिये सब चाहते हैं,
अमावस्या का ना साथ किया है
सुख में सब अविराम चले तो,
दुःख में किसने साथ दिया है।
आ, इस कहने को झूठ मानकर,
कर ले जीवन भर का साथ प्रिये
आगे आ जाये दो–दो पग तो,
निश्चित होंगे हाथ में हाथ प्रिये।। 2

मैं राही जब तेरी राहों का,
क्यों लौट गये संग चलते–चलते
देख रहे हैं तुम्हें दूर तक,
आँखों से आँसू ढलते–ढलते।
जब दो मन मिलने आये थे,
तब मत करते स्वीकार प्रिये
आओ, फिर से एक हो जायें,
फिर बसा लें नया संसार प्रिये।। 3

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मेरा तुझसे वह संबध था जो,
होता प्रतिमा से एक पुजारी का।
नहीं जानता था हाल बनेगा, जैसे–
हार के बाद एक जुआरी का।।
जीवन–मरण के इस अन्तराल में,
दे दो जीने का आधार प्रिये।
बता जाओ जीने की परिभाषा,
होगा एक और आभार प्रिये।। 31

बरस–बरस कर प्रेम के बादल,
नहीं थके थे नहीं रुके थे ।
मेरे पग प्रेम–मंजिल पाने को,
नहीं रुके थे नहीं थके थे ।।
तुम निर्मम नहीं पाषाण नहीं थी,
विरह में जलने को छोड़ गई ।
कहती थी बन्धन सात जन्म के,
फिर एक जन्म में क्यों तोड़ गई ? 32

खग, तरु व झरते झरनों ने,
कभी संयोगी गीत सुनाये थे।
सोरो उतरकर नभ–तारों ने,
रतना तेरे शृंगार कराये थे।
अब खग नभ तरु पूछ रहे हैं,
वे प्रेम–संकल्प कैसे टूट गये ?
बैठ मुंडेरी कागा पूछे है,
क्यों दोनों दोनों से छूट गये ? 33

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोटी–सी जीवन–बगिया की,
सींचा अँसुअन से रोते–रोते
कभी चमन महकेगा, सोच था–
बीज खुशी के बोते–बोते
सपने होनी की भेंट चढें,
खुशियाँ काल की ग्रास हुई
सारी अनहोनी भाग्य लिखी,
मन बन्धी उमेंगे उदास हुईं।।

मैं याचक, रतना रूप–समन्दर,
प्रेम समन्दर से माँग था
तप्त–मरु के किसी कोने ने,
जैसे जलधर से जल मांगा था
मन–पंछी की प्यास बुझाओ,
बन सावन की जलधार प्रिये
आओ, आओ, चली आओ रतना,
या तुलसी आता उस पार प्रिये ।।

जननी–जनक प्यारविहीन था मैं,
चुनिया ने गले लगाया था
पाँच वर्ष दुलार दे पायी, फिर–
प्रभु ने परलोक बुलाया था।
वर्षों बीते स्वान की भाँति, फिर–
तुमसे मिला अनोखा प्यार प्रिये
तुम चली गयी पद्माकर–संग,
अब किसका खोजूँ आधार प्रिये ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अथाह प्रेम–चर्चा ने रतना,
अमर करे दोनों के सपने ।
त्रिवर्ष–सम यदि जीवन जीते,
त्रिकाल सुधर जाते अपने ।।
मुझे मेरा अपराध बताकर,
फिर चली जाती गंगा–पार प्रिये ।
मार्तण्ड–बताया मैं जी लेता,
करता होनी को स्वीकार प्रिये ।। 37

घट–पनघट, सोरो–मग–बिथिका,
सब सूने–खोये से लगते हैं।
गीत–संगीत–कल–कल सरिता की,
सब उदास–रोये से लगते हैं।।
मनदर्पण में तेरा बिम्ब देखने,
सदा चला तेरे अनुसार प्रिये ।
मन चाहा कुन्दन बनने को,
सदैव ढला तेरे अनुसार प्रिये।। 38

अपनों के बीच पराया होकर,
कब तक पीड़ा के हाथ बिकूँगा ?
खुशियाँ भरने आँचल में तेरे,
घन–शावक–सा रोज मिटूँगा ।।
तेरी बाहों के उपधान मिले तो,
करलूँ दो पल का आराम प्रिये ।
अन्यथा बिन रतना जीवन में,
कैसा सुख कैसा आराम प्रिये ? 39
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोरो–वीथिका, हर घर–दर से पूछा,
तुलसी–प्रिया कहाँ चली गयी ?
जन मौन रहे, दर मौन रहे,
फिर भी आशा–लौ जली रही।।
नयनों से आँसु–धार बही होगी,
जब प्रिये–घर–दर छोड़ा होगा।
अन्तरमन टूट बिखर गया होगा,
जब प्यार का बन्धन तोड़ा होगा ।। 40

तेरी प्रीति के पंख लगाकर,
प्रीति–गगन में सदा उड़ा हूँ ।
जब भी प्रिये आयी तेरी स्मृति,
यकायक उसी ओर मुड़ा हूँ ।।
तुम कल्पना मेरे प्रेम–जगत की,
उजड़े उपवन की बहार प्रिये ।
इस तप्त–हृदय में आ फिर से,
कर दो शीतल बौछार प्रिये ।। 41

त्रियक पगडण्डी प्रीति बनी तो क्या,
मैं भी चलने का विश्वासी हूँ ।
लबालब खुशियों से तेरा जीवन,
गम सहने का मैं अभ्यासी हूँ ।
दूर क्षितिज को जब भी देखा,
उठ आयी प्रतिमा रतना की ।
अभिनन्दन को हाथ बढ़ाया तो,
फिर खोयी प्रतिमा रतना की ।। 42

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी पतझड़ भी अच्छे लगते थे,
अब पुष्प डाली भी रुला रही है।
खग–कुल की कुल–कुल मुझको,
घूँट वियोग का पिला रही है।।
सब कुछ बदल गया ऐसे जैसे,
सुबह से हो गई हो शाम प्रिये।
क्रंदित मन–पंछी रतना पुकारे,
लौट आओ पिय के धाम प्रिये।। 43

हम पंछी एक डाल के फिर क्यूँ,
काल–शिकारी हमसे जीत गया ।
उम्र लगी थी बूँद–बूँद भरने में,
कैसे पल में वो घट रीत गया ।।
तुलसी–चित्रकूट रतना पर्णकुटीर,
काश नल–दमयन्ती हो जाते ।
होता प्रेम अमर हम दोनों का,
प्रेम को नई प्रेम डगर दे जाते।। 44

बहती सरिता के कल–कल स्वर में,
अब पहला–सा संगीत नहीं है ।
यूँ तो खग–कुल अब भी गाते हैं,
पर पहला–सा गीत नहीं है ।।
गीत था रतना संगीत था रतना,
खग–कुल–कुल में थी रतना ।
क्षण मिलन के अब सताओ मतना,
वहाँ पथ बुहार रही होगी रतना ।। 45

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तप्त मरु–से इस जीवन में मेरे,
बन सावन तुम आयी थी ।
स्वान–सम जीवन जीता था,
जीवन–ऊर्जा तुमसे पायी थी ।।
पद्माकर संग जाने से रतना,
कल्पना संसार निर्मूल हुआ मेरा,
सोचा था पथ प्रसून खिलेंगे पर,
हर पथ पीड़–शूल हुआ मेरा ।। 46

त्रिसावन तेरे संग गुज़रे थे,
यह हृदय को रुला रहा है ।
मयूर–नृत्य–ये खग–कलरव,
प्रिये आओ तुम्हें बुला रहा है ।।
पुष्पित लताओं के झूले पर,
आज कैसे पेंग बढ़ाये तुलसी ।
आँखों से दूर अतिदूर हुए फिर,
किसे देख मुस्काये तुलसी ।। 47

तरु–लता अरु निर्मम सावन,
पीड़ित करते बोझिल मन को ।
काले जलधर विरह–वर्षा से,
जला रहे मेरे मन–उपवन को ।।
ना सावन–जलधर में रतना,
न ही किसी बूँद में रतना ।
आओ प्रिये इनको समझाओ,
बसी है तुलसी–मन में रतना ।। 48

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अधरों पर मुस्कान खिली तो,
समझा वासन्ति मौसम आया है।
भीगी पलकें हैं आभाष कराती,
मरु–धरा पर बादल छाया है ।।
जो हर पल सम्मुख रहती उसने,
क्यों आज क्षितिज वास किया है ?
कोई तो जाकर कह दो उससे,
तुम बिन तुलसी उदास हुआ है।। **49**

नित जला शलभ की भाँति,
उससे अमर प्रीति निभाने को ।
साथ मिला जीवन संगनी का,
जीवन–सागर तर जानें को ।।
साथी का हाथ मिलेगा यूँही,
भटका रहा हूँ अविराम प्रिये ।
हृदय क्रन्दन आता तो होगा,
रोकता होगा हर बार प्रिये ।। **50**

नित सबेरे खग प्रभाती गाकर,
संदेश तेरा ही सुना रहे हैं ।
घन–शावक स्मृति–पट पहने,
शायद उस पार बुला रहे हैं ।।
विरही मन को कैसे समझाऊँ ?
पल–पल तुझमें रमता जाता है ।
युग–सम पल बीत रहे हैं,
विरह क्रन्दन करता जाता है ।। **51**

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आम्र–बीज से पूछा करता था,
वह मेरा संगी किधर रहता है।
काली कोकिल तू बतला दे क्या,
वह भी कुछ ऐसा ही गाता है।।
अब तरुगण मुझसे पूछ रहे हैं,
कहाँ है वह अनोखा प्यार प्रिये?
कह देता हूँ केवल सपना था,
टूट गया स्वप्न–संसार प्रिये।। 52

माँगे थे तम से उजियारें,
क्यों प्रीत हुई थी निर्मम से ?
आँचल, बिछवे, कंगन, बाली,
क्यों भा गये थे अन्तर्मन में ?
कभी तुम दानी, मैं भिक्षुक था,
प्रीत का दान दिया होता।
अनमोल रत्न तुम रत्नों में,
कुछ मेरा मान किया होता।। 53

सपनों को क्यों अपना समझा ?
अब समझा सपने सपने होते हैं ।
कभी उन्हें भी चुनना पड़ता है,
जो कंटक स्वयं अपने बोते हैं ।
अब प्रातः की क्या आस करूँ ?
भविष्य अन्तहीन अंधेरी रात प्रिये ।
निश्चित फिर नया प्रातः उगेगा,
यदि आये हाथ में हाथ प्रिये ।। 54

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
झर–झर अखियन के झरनों ने,
मुझको कितनी बार रुलाया है।
होले–होले हिलती अलकों ने,
शायद बदरिया गाँव बुलाया है।।
त्रिसाल मोहपाश में बन्धा रहा,
निर्मम पर करके विश्वास प्रिये।
आशा की खेती सूख चली जब,
क्या करे बदरिया से आस प्रिये ? **55**

कैसे भूलूँगा तेरा आँचल ?
सिया था संयोग भरे धागे से ।
याद तो होगा खिसक गये थे,
शरमाकर नयन फेर आगे से ।।
वे ही भूली–बिसरी यादें अब,
कर जाती हैं मुझे उदास प्रिये ।
बार–बार आकर वे होले से,
करती है मेरा उपहास प्रिये ।। **56**

सुन्दर सपनों के सहारे जीकर,
मर मरकर भी जीता आया हूँ ।
तुझे पाने को घूँट गरल के,
युग–युग से पीता आया हूँ ।।
नर–नारी का संयोग पुरातन,
वियोग का क्यों वरण किया है ?
जो याचक तेरे अमर प्रेम का,
उसका तुमने क्यों मरण किया है ? **57**

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जलते–मरुस्थल से जीवन की,
अब कैसे प्यास बुझाऊँ मैं ?
हूँ चातक तुम निर्मम जलधर,
क्या गाकर तुम्हें बुलाऊँ मैं ?
तुम प्रभात मैं उदास शाम,
कैसे हो पायेगा मेल प्रिये ?
इसमें कोई कर्मगति है या,
फिर भाग्य–अनोखा खेल प्रिये ।। **58**

माटी अन्त है जब कण–कण का,
फिर क्यों सपनों के महल सजाए ?
नियत विच्छेद हमारा एक दिन,
फिर क्यों गए हो बिना बुलाए ?
अबोध रहा मैं ना जान सका,
प्रिये के उस प्रेम बुलावे को ।
प्रथम निमंत्रण कर गया बावरा,
समझ बैठा था प्रेम छलावे को ।। **59**

नभ–गंगा से माँगे उड़गन,
पिये की माँग सजाने को ।
लिये धरा से नभ–अश्रु भी,
नीलांचल में तेरे जड़ाने को।।
जो सोचा था सब बिखर गया,
कल्पित बस्ती प्रिये उजड़ गई ।
उड़ चले हैं भावों के पंछी,
प्रेम भाव चदरिया उधड़ गई ।। **60**

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सुर–सरिता के तट पहुंचे तुलसी,
खोजा जल–थल में रतना को ।
तट से पूछा तारों से पूछा,
पूछा जल–तरंगों से रतना को ।।
निरुत्तर रहें सब मौन रहें,
केवट से निवेदन करते तुलसी ।
भगौटा भाई सरिता पार कराओ,
प्रिये को मिलने जाते तुलसी ।। 61

तेरी भी तो कोई प्रिये होगी,
जीवन भर का गठबन्धन होगा ।
संग रहने की सौ लेती होगी,
प्रिये के माथे का चन्दन होगा ।।
तुझे शपथ है निज उसी प्रिय की,
प्रिये पास पहुँचाओ तुलसी को ।
दया करो हे! भगौटे केवट,
बदरिया बुला रही है तुलसी को ।। 62

अब रोको मत मुझको जाने दो,
तरनी नहीं तो मैं स्वयं जाऊँगा ।
साहसी का होता राम खिवैया,
गंगा डूब मरूँ या तर जाऊँगा ।।
डूब मरा तो राजा भक्त सुनों,
कर देना संस्कार इस तुलसी का ।
सुत तारापति चिता आग लगाए,
हो जाये उद्धार इस तुलसी का ।। 63

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम–भक्ति नैया, थे राम खिवैया,
राम ही बस पतवार बनें थे ।
जपते राम–राम तरते जाते तुलसी,
राम ही सहारा मझधार बनें थे।।
प्रिय मिलन की लगन लगी थी,
काल से ना भयभीत हुए तुलसी।
पार हुआ तो मिलन निश्चित है,
डूबे तो भवसागर पार हुए तुलसी ।। 64

नदिया को गिरना है सागर में,
विचार नहीं एक हकीकत है ।
प्रिय मिलन क्षितिज बना तो क्या ?
तुलसी हिय में बसा भगीरथ है ।।
झंझावत क्या रोकेंगे चाहत को ?
आगे बढ़ता जाता आश लगाए ।
बदरिया की पल–पल दूरी घटती,
प्रिय मिलन की मन प्यास जगाए।। 65

स्वयं अहम् में सरि बहती जाती,
फिर मेरी वेदना क्या जानेगी ?
क्षितिज तक है बाढ़ की चादर,
प्रेम की सीमा क्या नापेगी ?
डुबाया तो तेरा विश्वास उठेगा,
पार किया मिल पाऊँ रतना से ।
मर्यादा रखो पुनीत मिलन की,
अपने मन की कह पाऊँ रतना से ।। 66

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं राकेश तुम प्रेम चकोरी,
यूँ तो त्रिवर्ष साथ चले थे ।
प्रातः की भाँति साथ हँसे तो,
शाम की भाँति साथ ढ़ले थे ।।
उफनती गंगा से रतना कह दो,
डुबा ना दे बीच मझधार प्रिये ।
करना प्रतीक्षा तुम कर फैलाये,
तर कर आता उस पार प्रिये।। 67

डुबोकर कभी उबारकर मानों,
गंगा परीक्षा लेती तुलसी की ।
जोश–होश का आभाष कराकर,
कभी हिम्मत बढ़ाती तुलसी की ।।
रतना –ध्यान में तुलसी जैसे,
भक्त को राम दिखाई देते हैं ।
मन में रतना अधर पर रतना,
प्रिय के स्वर सुनाई देते हैं ।। 68

घनघोर घने घन–झंझा घेरे,
ना माझी ने दिया साथ मेरा ।
राम–सहारा दे गंगा बोली,
मेरी लहर देंगी साथ तेरा ।।
फिर क्या था, थी छल्लांग लगाई,
अब फसा समय की मझधार प्रिये ।
पतवार बने रतना के कर तो,
उतर जाऊँगा उस पार प्रिये।। 69

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-G

CC-0. Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
क्या बीतेगी माली पर जिसकी ?
चमन उजड़ गया खिलते–खिलते ।
गंगा–धार–निराधार है तुलसी,
तट दूर हुआ है मिलते–मिलते।।
करतल–नैया–आधार रहा तो,
तुलसी आयेगा उस पार प्रिये ।
कर–पतवार यदि बनी रही तो,
हो भी जाएगी गंगा पार प्रिये।। 70

शव तरनी रूप बनाकर गंगा ने,
था पार कराया तुलसी को ।
द्वार पर भुजंग ने सहारा देकर,
प्रिय पास पहुँचाया तुलसी को।।
तेरे प्यार–रूप समन्दर में प्रिये,
तुलसी स्वयं को डुबा रहा है ।
चलो, चले अब लौट चले रतना,
सोरो का घर–दर बुला रहा है ।। 71

अपने प्रिय के पुनर्मिलन की,
चाहत में बहता जाता तुलसी ।
अनुज–संग बदरिया धाम गयी,
यहाँ जल–उबरता डूबता तुलसी ।।
गंगा बहाये ले जाती रतना,
मुझको यमराज के धाम प्रिये ।
मंगलमय हो जीवन प्रिये, मेरी–
हो चली जीवन की शाम प्रिये ।। 72

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लगा तुम्हारे कर पतवार बने थे,
तो गंगा पार उतर आया मैं ।
शव–नौका–चढ़ा गंगा ने भी,
मझधार से पार उतारा मैं ।।
तुम्हें खोजता आया हूँ ऐसे,
जैसे भक्त खोजे प्रभु–धाम प्रिये।
प्रिये! लिवाने आये तेरे स्वामी,
चलो चले अब सोरो–धाम प्रिये।। 73

बन बटेउ तेरी चाह–डगर पर,
दिन–रात चला अविराम चला।
मनचाहा कुन्दन बनने को रतना,
रोज़ ढला सुबह–शाम ढला।।
रोज़–रोज़ के चलने–ढलने में,
खो ना बैठूँ यह आकार प्रिये।
सोरो चलो अब बिना विचारे,
तेरे कंत आये हैं द्वार प्रिये।। 74

गंगा के तट से तुमको पूछा ,
तट मौन रहें लहरें मौन रहीं ।
जल–थल मौन रहें ना बोल सकें,
निरूत्तर द्रुम–लतायें मौन रहीं ।।
झंझावात, लहरें, भगोटा केवट,
करते थे मेरा उपहास प्रिये।
संकल्प लिया प्रिये मिलन का,
रात में ही आया तेरे पास प्रिये ।। 75

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुज संग बदरिया क्या आयी,
लगा निःसार हुआ जीवन मेरा ।
अविरल बहते आँसू नहीं रुके,
यहाँ खुशहाल बना सावन तेरा।।
याद करो रतना याद तो होगा,
सोरो का वह सुन्दर संसार प्रिये ।
चलो चलें अब वहीं लौट चलें,
बुला रहें हैं सूने घर–द्वार प्रिये।। 76

कल्पित संसार बसाने को मैं,
तुम्हारे हिय द्वार पर आया हूँ ।
कह दोगी कि अभी चलती हूँ,
यही सोच तेरे घर आया हूँ ।।
परिजन जगने, प्रभात से पहले,
क्यों न पहुँचे सोरो धाम प्रिये ?
चलो, मेरे संग ऐसे चलो तुम,
जैसे जनकसुता संग राम प्रिये ।। 77

त्रिवर्ष बाद मैं मयके आयी थी,
तुम्हें भी ससम्मान बुलाया जाता ।
मैं भी अपने भाग्य पर इठलाती,
तुम्हें मान–सेज सुलाया जाता ।।
सब मान मर्यादा तोड़कर स्वामी,
क्यों आये हो बदरिया धाम प्रिये ?
मेरी मानों अभी लौट जाओ,
रह जाएगा दोनों का मान प्रिये।। 78

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अस्थि चर्म की सुन्दर काया पर,
क्यों नाहक मोह करते स्वामी ?
देह रूप उम्र है ग्रास काल के,
क्यों प्राण निछावर करते स्वामी ?
जितना मोह मुझसे करते हो,
उतना राम से करते स्वामी ।
मुझमें डूबे तो पतन निश्चित है,
डूब राम–समन्दर तरते स्वामी ।। 79

रूप, उम्र–प्रेम पलछिन घटता है,
क्यों इनसे प्रेम करते स्वामी ?
दशरथ–नन्दन अजर–अमर की,
क्यों नहीं शरण में जाते स्वामी ?
राम–डूबोगे तो जग जानेगा,
क्यों नारी में खो जाते स्वामी ?
राम–भक्ति नैया राम खिवैया,
क्यों तुम नहीं तर जाते स्वामी ? 80

नारी चर्म में क्यों रमते स्वामी,
जीव में रमे राम को पाओ तो ।
भवसागर से तरना निश्चित है,
यदि हिय में राम को लाओ तो ।।
हे स्वामी ! भक्ति करो राम की,
वही राम तुम्हें पार उतारेंगे ।
जिस राम ने करोड़ों पापी तारे,
क्या तुमको ना संसार उतारेंगे ? 81

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तुलसी मन कहता चाह राम की,
फिर कहता है चाहूँ रतना को ।
मोह छोड़ शरण जाँऊ राम की,
मोह कहता है पाऊँ रतना को ।।
रतना त्याग यदि राम को चाहा,
तो मोक्ष मिल जाएगा तुलसी को ।
राम त्याग यदि रतना में डूबा,
तो कौन जाने पाएगा तुलसी को ? 82

इधर प्रेम खींच रहा रतना का,
उधर राम बुलाते हैं भक्ति को ।
तारापति सुत–मोह रोक रहा ,
क्षीण किये तन–मन–शक्ति को ।।
मोह–भक्ति–भँवर की द्विविधा से,
हे राम! उबारो इस तुलसी को ।
तिय अरु सुत मोहपास डुबाओ,
या पास बुलाओ इस तुलसी को ।। 83

मैं भी रतना तेरे संग हँस लूँ,
कल ना मेरे संग हँस पाओगी।
दो डग आ मेरे साथ चलो फिर,
कल ना मेरे संग चल पाओगी।।
अब रतना गुरू, तुलसी शिष्य हुआ,
रतना–मुख–माँवाणी बोल रही है ।
कुछ करवाने–रचवाने तुलसी से,
ज्ञान–चक्षू रतना खोल रही है ।। 84

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नरहरि-वेश में अरु राम-रावण में,
कही राम–कथा इस तुलसी को ।
आज तुमने है स्मरण करायी,
वही राम–कथा इस तुलसी को ।।
कामनी, काम अरु चर्म–लोभी को,
दी राम–कथा इस तुलसी को ।
मोह फंसे हर जन–जन को देना,
जो दी राम–कथा इस तुलसी को ।। 85

जिस राम ने रावण–मारीचि मारे,
क्या मेरे पापों को ना मारेंगे ?
अहिल्या शबरी को तारने वाले,
क्या इस पापी को ना तारेंगे ?
राम–भक्ति की राह दिखाकर,
जीते जी मुक्ति धाम दिया है ।
किसकी तिय ने ऐसा काम किया ?
जो रतना तुमने आज किया है ।। 86

अज्ञान–रात अन्धेरी बीत चुकी,
ज्ञान–राम–रूप प्रभात दिया है ।
आज गुरू बनकर रतना तुमने,
मेरे मुक्ति–मग–प्रकाश किया है ।।
इस उपकार की क्या दक्षिणा दूँ ?
क्या दूँ तिय–विरक्ति के बदले ?
भौतिक सुख से कर खाली मेरे,
क्या दे पाऊँ राम–भक्ति के बदले ? 87

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम–भक्ति–पद गा गाकर रतना,
सुख अरु माया मैंने थे पाये ।
उसी राम कृपा से रतना पायी,
वही राम आज रतना घर लाये ।।
राम पद गाये पर राम ना पाये,
हिय–राम–लौ जलायी रतना ने ।
कामी अरु लोभी इस तुलसी को,
राम–रसायन पिलायी रतना ने ।। 88

सृष्टि–कर्ता मनुष्य यंत्र मात्र है,
मोह–भरी रतना कैसे जानेगी ?
जगा रही वाणी को तुलसी में,
सृष्टि–रहस्य को कैसे जानेगी ?
बहाना मात्र है तिय वचन तो,
बुला रही है माँवाणी तुलसी को ।
अभूतपूर्व रचवाना है इससे, तिय–
विमुख कराती माँ तुलसी को ।। 89

अदृश्य लिखते जो जन मानस का,
बुला रहे चरित लिखवाने तुलसी को।
निर्धन के धन जो बल निर्बल के,
बुला रहे देने वाणी–धन तुलसी को ।।
विधि–विधान में क्यों बाधक रतना,
बनती है रोक कर तुलसी को ?
होनी बनी है केवल होने को,
हँस कर विदा करो अब तुलसी को ।। 90

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है काल यमन का चक्र दमन का,
हिन्दुत्व–पताका फहरानी तुलसी को ।
हिंसक अधर्मी अरु पापी जन को,
मानवीय–राह दिखानी तुलसी को ।।
बाल्मीकि–पग–चिह्नों पर जाने दो,
रोक ना ले काम अरु अश्रु–धारा ।
होनी की रतना सहयोगी हो जा,
कर अर्पण राम को तुलसी प्यारा ।। 91

इधर राम की ओर पग बढ़ते हैं,
उधर टप–टप आँसू गिरते हैं ।
इधर खींचे राम–भक्ति की ऊर्जा,
उधर मिलन–भाव कर मलते हैं ।।
इधर राम–राम अरु राम की लहरें,
उधर स्वयं की करनी रुला रही है ।
इधर मन में चित्रकूट धाम बसे,
उधर यादें गरल पिला रही हैं ।। 92

अब क्षमा करो अपनी रतना को,
दोनों में बस परिहास हुआ है ।
मैं ग्रसित हूँ अपराध बोध से,
अनजाने में ये अपराध हुआ है ।।
उन्हें अब भूल भी जाओ स्वामी ,
थे शब्द अधर के ना मन के है ।
जाने को कहा था रामशरण में,
जो तारनहार जन–जन के हैं ।। 93

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं दासी हूँ तुम स्वामी मेरे,
ना कुछ चाहती स्वामी के बदले ।
स्वामी चाहिए अरु स्वामी–सेवा,
कुछ नहीं चाहती इसके बदले ।।
त्याग लोक–लाज अभी चलती है,
तुलसी संग तुलसी की रतना ।
सोरो में अपने उसी धाम को,
स्वर्ग बनाएगी तुलसी की रतना ।। 94

थे मन में राम हर भाव में राम,
हिय में राम बसे थे तुलसी के ।
कण–कण में राम जन–जन में राम,
प्राणों में राम बसे थे तुलसी के ।।
बाहर राम रोम–रोम में राम,
आँखों में राम बसे थे तुलसी के ।
वह जगह नहीं जहाँ ना थे राम,
जल–थल में राम बसे थे तुलसी के ।। 95

दूर जाता जिसको देख रही हो,
क्षितिज जा पहुँचे तेरे तुलसी ।
नयन जिस पर अविराम टिके थे,
ओझल होने को है तेरे तुलसी ।
पिघला सकी ना जिसे हिय–पुकार,
अश्रु–धारा कैसे रोक सकेगी ।
शिवजी नहीं जो तेरी जटायें,
बहती गंगा को रोक सकेंगी ।। 96

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक तिय ने यम से स्वामी छीने,
इसने पास राम के भेज दिये ।
एक स्वर्ग गई कर स्पर्श राम को,
इसने कंत मोक्ष को भेज दिये ।।
छोड़ बदरिया स्वामी संग जाती,
तो मिलता राम–भक्ति प्रसाद वहाँ ।
मिलते राम–राममय हो जाती,
मिट जाते जीवन–अवसाद वहाँ।। **97**

महेन्द्र बावरा
महामहिम राज्यपाल (उ०प्र०) द्वारा
राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित
9997424357. 9808650719

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महेन्द्र 'बावरा'

प्रकाशाधीन आगामी रचनाएं-

- रतना की पीड़ (खण्ड काव्य)
- पराई बिटिया (उपन्यास)
- सावधान अर्जुन (खण्ड काव्य)
- माँ दिखाओ मझको भी संसार (उपन्यास)

CC-0. Jammigan Welfare Trust. Digitized by eGangotri. Funding by MoE-IKS. MoE-2025-Gran